क्रियायोग आश्रम व अनुसंधान संस्थान

संचालन द्वारा: योग सत्संग समिति/क्रियायोग सत्संग समिति
संस्थापक-अध्यक्ष : श्री गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम्

मातृ केन्द्र व मुख्यालय
झूँसी, इलाहाबाद-211019
उत्तर प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0532-2569 243
मोबाइल: 9415217277/81
ई-मेल:yogisatyam@hotmail.com

उत्तरी अमरीका केन्द्र :
योग फेलोशिप टेम्पुल
388 प्लेन्स रोड, किचनर. ओन्टोरिया
कनाडा, एन 2 आर 1 आर 8
दूरभाष : 001-519-696-3869
ई-मेल: kriyayoga.canada@yahoo

बेवसाइट: kriyayoga-yogisatyam.org
क्रम संख्या .....

वर्तमान समय आरोही द्वापर का 313 वाँ वर्ष है
दिनाँक :

क्रियायोग की साधना ''सुखदुःखे समेकृत्वा'' का प्रायोगिक अभ्यास

''सुख-दुःख'' ज्ञान व शक्ति का पूर्ण रूप है जिसमें स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड के सृजन, सुरक्षा और परिवर्तन का सम्पूर्ण ज्ञान समाहित है । -स्वामी श्री योगी सत्यम् जी

22 फरवरी, 2013 इलाहाबाद । ''पैर की अँगुली से सिर तक स्वरूप में प्रकट होने वाले विभिन्न परिवर्तन जिन्हें हम कड़ापन-ढ़ीलापन, दर्द-आराम, हल्कापन-भारीपन आदि के रूप में अनुभव करते हैं, सुख दुःख नहीं है। जिन परिवर्तनों को हम सुख दुःख के रूप में अनुभव करते हैं, परमात्मा की दिव्य शक्ति है जिसमें स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड के सृजन, सुरक्षा और परिवर्तन का सम्पूर्ण ज्ञान समाहित है । सुख और दुःख की सम्पूर्ण अनुभूतियाँ वह दिव्य शक्ति है जो स्थूल होकर हड्डियाँ, माँसपेशियाँ, त्वचा, रक्त आदि के रूप में प्रकट हो रही है । क्रियायोग साधना के द्वारा स्वरूप में प्रकट होने वाली सुख दुःख रूपी दिव्य शक्ति में गहन एकाग्रता केन्द्रित करके साधक शरीर को इच्छानुसार बनाने, सुरक्षित करने और परिवर्तित करने का ज्ञान प्राप्त कर लेता है । क्रियायोग साधना के द्वारा स्वरूप में प्रकट होने वाली सुख दुःख रूपी शक्ति और ज्ञान की दिव्य अनुभूति में गहन एकाग्रता केन्द्रित करने पर साधक साकार-निराकार, दृश्य-अदृश्य, माया-ब्रह्म, अतीत, वर्तमान, भविष्य आदि सभी के बारे में एक साथ ज्ञान प्राप्त कर लेता है इसलिए क्रियायोग विज्ञान को पूर्ण शिक्षा कहा गया है ।'' उक्त विचार अन्तरार्ष्ट्रीय क्रियायोग वैज्ञानिक स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने मुक्ति मार्ग पर सेवारत क्रियायोग सत्संग शिविर में आयोजित क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यक्रम में व्यक्त किया । कार्यक्रम में भारत, कनॉडा, अमरीका, पोलैण्ड, ब्राजील, रूस, गयाना, सिंगापुर, फिनीलैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों से आये हुए साधक, प्रबुद्ध वर्ग तथा तीर्थयात्रियों और कल्पवासियों ने भारी संख्या में भाग लिया ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि श्रीमद्भगवदगीता में इसी विज्ञान को स्पष्ट करते हुए कहा

गया है सुखदुःखे समेकृत्वा अर्थात् सुख और दुःख को समान करिए । सुख दुःख को समान करने का अभिप्राय है सुख और दुःख दोनों अनुभूतियों को एक समान समझना व दोनों को अनुभव करने पर दोनों एक ही तत्व के रूप में प्रकट हों । सम्पूर्ण अनुभूतियाँ जिन्हें हम सुख और दुःख के रूप में अनुभव करते हैं वे परम शक्ति तत्व, परम ज्ञान तत्व, परम शांति तत्व व जीवन तत्व है । क्रियायोग के अभ्यास में साधक स्वरूप में प्रकट होने वाली सुख और दुःख की सम्पूर्ण अनुभूतियों में गहन एकाग्रता का अभ्यास करता है । एकाग्रता का स्वरूप अनन्त होने पर सुख दुःख की द्वन्दात्मक अनुभूतियाँ अदृश्य हो जाती हैं और साधक ज्ञान के अनन्त प्रकाश से आलोकित हो जाता है ।

''सुख दुःख को समान करिए'', विचार को गंध तथा स्वाद के तल पर प्रयोगिक रूप में सिद्ध करने के सूक्ष्म विज्ञान पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने स्पष्ट किया कि इन्द्रियाँ आत्मज्ञान की प्राप्ति का साधन हैं । इन्द्रियो से राग द्वेष होने पर अज्ञानता प्रकट होती है जिसे हम बीमारी, तनाव, चिन्ता, भय, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद्, मत्सर (अहंकार, आदत, अज्ञान) आदि के रूप में अनुभव करते हैं । स्वामी जी ने आगे कहा कि गंध इन्द्रिय के तल पर राग द्वेष का समापन होने पर हड्डियों से संबंधित बीमारियाँ नहीं होती है । गंध पृथ्वी तत्व से संबंधित है तथा स्वरूप में पृथ्वी तत्व की अनुभूति स्थूलता के रूप में होती है । शरीर में स्थूलता की सर्वाधिक अनुभूति हड्डियों के रूप में होती है । नाक इसलिए नहीं मिली है कि विभिन्न प्रकार की गंध से राग द्वेष करें । नाक से हर प्रकार की गंध लेना और उससे राग द्वेष न करना, सूक्ष्म विज्ञान है जिससे हड्डियों में बुढ़ापा, दाँत आदि का गिरना आदि नहीं होता है ।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने आगे स्पष्ट किया कि स्वाद इन्द्रिय के तल पर राग द्वेष न करके हर प्रकार के स्वाद की अनुभूति से समान प्रेम होने पर जनन अंगों से संबंधित बीमारियाँ नहीं होती हैं । जनन अँगों में किसी भी प्रकार का बुढ़ापा, शक्ति का क्षय आदि नहीं होता है । शरीर चिर युवा रूप में बनी रहती है । इस प्रकार क्रियायोग साधना के द्वारा सुखदुःखे समेकृत्वा सूत्र का स्वाद और गंध इन्द्रिय के तल पर प्रयोगिक अभ्यास कराते हुए स्वरूप संरक्षण के दिव्य आध्यात्मिक नियमों पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डालते हुए अभ्यास कराया गया । क्रियायोग पूर्ण आध्यात्मिक विज्ञान है जिसके अभ्यास से एक साथ सम्पूर्ण कष्टों का समापन हो जाता है, स्वरूप और ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण रहस्यों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है और अन्ततः स्पष्ट हो जाता है कि कुछ भी असंभव नहीं है । अनन्त संभावनाओं का जागरण ही परमात्मा में पूर्ण भक्ति है । क्रियायोग प्रशिक्षण एवं अभ्यास का कार्यक्रम प्रतिदिन कुम्भ मेला में मुक्ति मार्ग पर प्रातः 8:00 बजे से 10:00 बजे तक तथा दोपहर 3:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक और रात्रि 11:00 बजे से 1:00 बजे तक हिन्दी तथा अँग्रजी भाषा में बड़े ही प्रभावशाली रूप में चल रहा है । शिविर मे कैंसर, ब्लडप्रेशर, डायबिटीज, गठिया आदि से संबंधित रोगों के निदान के लिए अनेक लोग रह रहे हैं । उल्लेखनीय है कि क्रियायोग साधना के द्वारा सभी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं ।

- योगमाता